



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऊजोत समाचार	17-10-23	5	1-4

कम लागत से उत्पादन बढ़ाना व युवा पीढ़ी को कृषि व्यवसाय से जोड़ना ही प्राथमिकता : प्रो. काम्बोज

हकृति में तीन दिवसीय 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की वार्षिक कार्यशाला का शुभारंभ

हिसार, 16 अक्टूबर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला का शुभारंभ हुआ, जिसमें विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वतौर मुख्यअतिथि रहे, जबकि महापंक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। इसके अलावा केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. बृजेश सिंह भी उपस्थित रहे। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि



मंच पर उपस्थित कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य अधिकारीगण।

अनुसंधान परिषद्-केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई इस कार्यशाला में देश के विभिन्न राज्यों के 25 भारतीय कृषि परिषद् परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। मुख्यअतिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि भारत की कृषि-खाद्य नीति, कम लागत से खाद्य उत्पादन को बढ़ाना और कृषि को युवा पीढ़ी के लिए एक आकर्षक व्यवसाय बनाना की चुनौतियों पर केंद्रित है परंतु उत्पादकता में धीमी वृद्धि, धारम जलवायु घटनाएं, उत्पादन की बढ़ती लागत और कृषि जोत का निरंतर विखंडन किसानों के लिए कृषि-आधारित आजीविका को अस्थिर बना रहा है। उन्होंने प्रतिभागी वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे इस बैठक के

दौरान भारत में आलू की वर्तमान और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा करें। साथ ही राष्ट्रीय खाद्य व पोषण सुरक्षा को रखा के लिए रणनीति तैयार करें। कुलपति ने आलू के संदर्भ में बोलते हुए कहा कि 376 मिलियन टन के रिकॉर्ड वैश्विक उत्पादन के साथ चावल और गेहूं के बाद आलू दुनिया की तीसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है। चीन (94 मिलियन टन) के बाद भारत आलू का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक (54.2 मिलियन टन) है। विश्व स्तर पर भारत का आलू उत्पादन लगभग 14.3 प्रतिशत है। भारत में उत्तर प्रदेश सबसे बड़ा उत्पादक (16.16 मिलियन मीट्रिक टन) है और हरियाणा 0.78 मिलियन मीट्रिक टन आलू का उत्पादन करता है। आलू की उच्च उत्पादकता और पोषक मूल्य के कारण एफएमओ ने

इसे भविष्य के लिए भोजन के रूप में नामित किया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने आलू में जलवायु परिवर्तन आधारित शोध करने पर जोर दिया। साथ ही जलू में पोषण आधारित अनुसंधान के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आलू को कम उपधि की विविधता वाली, गर्मी सहने वाली किस्मों पर शोध को प्राथमिकता देना समय की मांग है। उन्होंने कहा जहाँ खेती योग्य भूमि कम है वहाँ प्रति इकाई क्षेत्र और समय में तुलनात्मक रूप से अधिक आर्थिक लाभ देने वाली फसल है जिसके कारण देश के छोटे और सीमांत किसान आलू की खेती को प्राथमिकता दे रहे हैं। केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. बृजेश सिंह ने बताया कि देश में आलू का उत्पादन व पोषकता बढ़ाने के उद्देश्य से अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (आलू) के अंतर्गत देश के विभिन्न राज्यों में 25 केंद्रों पर अनुसंधान किए जा रहे हैं, जिनका मुख्यालय केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब कृषि	17.10.23	2	3-6

41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना पर कार्यशाला शुरू कम लागत से उत्पादन बढ़ाना व युवा पीढ़ी को कृषि व्यवसाय से जोड़ना ह्ये प्राथमिकता : प्रो. काम्बोज

हिसार, 16 अक्टूबर (ब्यूरो) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विश्वविद्यालय में 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की 2 दिवसीय वार्षिक परिषद का शुभारंभ हुआ। इसमें विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वतीर अध्यक्षता रहे, जबकि सहायक महानिदेशक कुल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. भाकर पांडे विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद। इसके अलावा केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. बृजेश सिंह भी उपस्थित। इस कार्यशाला में देश के विभिन्न राज्यों के भारतीय कृषि परिषद परियोजना केंद्रों से ए. वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।

मुख्यअतिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे इस बैठक दौरान भारत में आलू की वर्तमान और भविष्य संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा करें। साथ राष्ट्रीय खाद्य व पोषण सुरक्षा को रक्षा के ए. रणनीति तैयार करें। कुलपति ने कहा कि



कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

376 मिलियन टन के रिकॉर्ड वैश्विक उत्पादन के साथ चावल और गेहूँ के बाद आलू दुनिया की तीसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है। चीन (94 मिलियन टन) के बाद भारत आलू का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक (54.2 मिलियन टन) है। विश्व स्तर पर भारत का आलू उत्पादन

लगभग 14.3 प्रतिशत है। भारत में उत्तर प्रदेश सबसे बड़ा उत्पादक (16.16 मिलियन मीट्रिक टन) है और हरियाणा 0.78 मिलियन मीट्रिक टन आलू का उत्पादन करता है। आलू की उच्च उत्पादकता और पोषक मूल्य के कारण एफ.ए.ओ. ने इसे भविष्य के लिए भोजन के

रूप में तामित किया है। कुलपति ने कहा कि हरियाणा की जलवायु परिस्थितियों के लिए आलू की 16 किस्मों की सिफारिश की गई है, जिनमें से कुफरी कादराह, कुफरी बहार, कुफरी सतलज, कुफरी पुष्कर और कुफरी पुखराज सबसे अधिक उगाई जा रही किस्में हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (कुल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने आलू में जलवायु परिवर्तन आधारित शोध करने पर जोर दिया। केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. बृजेश सिंह ने बताया कि केंद्र का उद्देश्य विकास की दृष्टि से हरियाणा के कृषि-जलवायु क्षेत्रों में समस्या उन्मुख अनुप्रयुक्त अनुसंधान करना है।

इस अवसर पर भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी के पूर्व निदेशक डॉ. पी.एस. नायक व केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के पूर्व निदेशक डॉ. बी.पी. सिंह भी मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समर उजाला	17-10-23	2	5-6

राष्ट्रीय खाद्य व पोषण की रक्षा के लिए रणनीति तैयार करें : कांबोज

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कृषि महाविद्यालय में 41वें अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि इस बैठक के दौरान भारत में आलू की वर्तमान और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा करें। साथ ही राष्ट्रीय खाद्य व पोषण की रक्षा के लिए रणनीति तैयार करें।

प्रो. कांबोज ने बताया कि एचएयू स्थापित केंद्र में हरियाणा के विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में समस्या आधारित अनुसंधान और अच्छी गुणवत्ता वाले आलू की अधिक उपज प्राप्त करने के लिए वर्ष 1975 से कार्य किया जा रहा है। विश्वविद्यालय ने आज तक प्रदेश की जलवायु परिस्थितियों के लिए आलू की 16 किस्मों की सिफारिश की है, जिनमें कुफरी बादशाह, कुफरी नहार, कुफरी सतलज, कुफरी पुष्कर और कुफरी पुष्करज सबसे अधिक उगाई जा रही किस्में हैं।

कुलपति ने बताया कि कार्यशाला के पहले दिन चावल-आलू प्रणाली में चावल के भूमे का प्रबंधन, माइक्रो सिंचकलर और

विश्व में भारत आलू का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक

कुलपति ने कहा कि 376 मिलियन टन के रिकॉर्ड वैश्विक उत्पादन के साथ चावल और गेहूँ के बाद आलू दुनिया की तीसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है। चीन (94 मिलियन टन) के बाद भारत आलू का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक (54.2 मिलियन टन) है। विश्व स्तर पर भारत का आलू उत्पादन लगभग 14.3 प्रतिशत है। भारत में उत्तर प्रदेश सबसे बड़ा उत्पादक (16.16 मिलियन मीट्रिक टन) है। वहीं हरियाणा 0.78 मिलियन मीट्रिक टन आलू का उत्पादन करता है। इसकी छेती राज्य के कुल सब्जी क्षेत्र के 9.12 प्रतिशत भाग में की जाती है और कुल सब्जी उत्पादन में आलू उत्पादन का 13.73 प्रतिशत योगदान है।

ड्रिप सिंचाई का उपयोग करके आलू की शुरुआती बुआई, जिनकी कमी वाली मिट्टी में जिनका अनुप्रयोग, ड्रिप सिंचाई के तहत ऊँचे बेड पर रोपण, जैविक आधारित उत्पादन तकनीक पर सिफारिशें सामने आई हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महाधक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने आलू में जलवायु परिवर्तन आधारित रोध करने पर जोर दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दीनक मास्कल	17-10-23	2	1-4

कार्यशाला • 54.2 मिलियन टन उत्पादन के साथ भारत चीन के बाद आलू का बड़ा उत्पादक: काम्बोज

चावल-गेहूं के बाद आलू तीसरी महत्वपूर्ण फसल

भास्कर न्युज़ | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि 376 मिलियन टन के रिकॉर्ड वैश्विक उत्पादन के साथ चावल और गेहूं के बाद आलू दुनिया की तीसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है।

चीन के 94 मिलियन टन के बाद भारत आलू का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक 54.2 मिलियन टन है। विश्व स्तर पर भारत का आलू उत्पादन लगभग 14.3 प्रतिशत है। भारत में उत्तर प्रदेश सबसे बड़ा

उत्पादक 16.16 मिलियन मीट्रिक टन है और हरियाणा 0.78 मिलियन मीट्रिक टन आलू का उत्पादन करता है। इकट्ठे के सब्जी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्-केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा संयुक्त रूप से कार्यशाला आयोजित की गई।

इसमें देश के विभिन्न राज्यों के 25 भारतीय कृषि परिषद् परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। कुलपति ने कहा कि हरियाणा भी सब्जी फसलों में आलू क्षेत्रफल एवं उत्पादन दोनों में प्रमुख स्थान रखता है। इसकी खेती राज्य के कुल सब्जी क्षेत्र के 9.12 प्रतिशत भाग में की जाती है और कुल सब्जी उत्पादन में आलू उत्पादन का 13.73 प्रतिशत योगदान है।

आलू के लिए एचएयू ने की 16 किस्मों की सिफारिश

प्रदेश की जलवायु परिस्थितियों के लिए आलू की 16 किस्मों की सिफारिश की गई है, जिनमें से कुफरी बादशाह, कुफरी बहार, कुफरी सतलज, कुफरी पुष्कर और कुफरी पुखराज सबसे अधिक उगाई जा रही किस्मों हैं।

देश में 25 केंद्रों पर की जा रही रिसर्च

केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. वृजेश सिंह ने बताया कि अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना आलू के अग्रणी देश के विभिन्न राज्यों में 25 केंद्रों पर अनुसंधान किए जा रहे हैं, जिनका मुख्यालय केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला है।

गर्मी रहने वाली किस्मों पर शोध की जरूरत

फूल-सब्जी-मसाले और औद्योगिक पौधे के भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सहायक महानिदेशक डा. सुधाकर पांडे ने कहा कि आलू की कम अर्वाधि की विविधता वाली, गर्मी रहने वाली किस्मों पर शोध को प्राथमिकता देना समय की मांग है। जहां खेती योग्य भूमि कम है वहां प्रति इकाई क्षेत्र और समय में तुलनात्मक रूप से अधिक आर्थिक लाभ देने वाली फसल है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समूचा पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	17.10.23	4	2-6

उत्पादन बढ़ाना व युवा पीढ़ी को कृषि से जोड़ना हो प्राथमिकता

जामरग संवाददाता, हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि भारत की कृषि-खाद्य नीति, कम लागत से खाद्य उत्पादन को बढ़ाना और कृषि को युवा पीढ़ी के लिए एक आकर्षक व्यवसाय बनाना की चुनौतियों पर केंद्रित है। परंतु उत्पादकता में धीमी वृद्धि, चरम जलवायु घटनाएँ, उत्पादन की बढ़ती लागत और कृषि जगत का निरंतर विखंडन किसानों के लिए कृषि-आधारित आजीविका को अस्थिर बना रहा है।

बैठक में विज्ञानों भारत में आलू की वर्तमान और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा करें। राष्ट्रीय खाद्य व पोषण सुरक्षा की रक्षा के लिए रणनीति तैयार करें। कुलपति सोमवार को हकूवि के कृषि महाविद्यालय में 41वीं अर्द्धशत भारतीय समांन्वत आलू अनुसंधान परिषदों की तीन दिवसीय वार्षिक



कार्यशाला में मंच पर उपस्थित कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य अधिकारियों।

कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डा. सुधाकर पांडे विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डा. बृजेश सिंह भी उपस्थित रहे। यह कार्यशाला हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय आलू

अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई। इसमें देश के विभिन्न राज्यों के 25 भारतीय कृषि परिषद परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।

कुलपति ने कहा कि हरियाणा में आलू की खेती राज्य के कुल सब्जी क्षेत्र के 9.12 प्रतिशत भाग में की जाती है। कुल सब्जी उत्पादन में आलू उत्पादन का 13.73 प्रतिशत योगदान है। उन्होंने कहा कि हरियाणा की जलवायु परिस्थितियों के लिए

आलू की 16 किस्मों को सिफारिश की गई है, जिनमें से कुफरी बादशाह, कुफरी बहार, कुफरी सतलज, कुफरी पुष्कर और कुफरी पुखराज सर्वाधिक उगाई जा रही किस्में हैं।

आलू में जलवायु परिवर्तन आधारित शोध करने पर जोर डा. सुधाकर पांडे ने आलू में जलवायु परिवर्तन आधारित शोध करने पर जोर दिया। साथ ही आलू में पोषण आधारित अनुसंधान के महत्व पर भी प्रकाश डाला। शिमला से निदेशक डा. बृजेश सिंह ने बताया कि आलू का उत्पादन व पोषकता बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न राज्यों में 25 केंद्रों पर अनुसंधान किए जा रहे हैं। केंद्र का उद्देश्य विकास की दृष्टि से हरियाणा के कृषि-जलवायु क्षेत्रों में समस्या उन्मुख अनुप्रयुक्त अनुसंधान करना है। इसमें फसल सुधार संकाय के प्रभारी डा. विनोद कुमार, फसल

उत्पादन संकाय के डा. जगदेव शर्मा और फसल संरक्षण संकाय के डा. संजीव शर्मा अपने-अपने विषय पर व्याख्यान देंगे। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष एवं बैठक के आयोजक सचिव डा. एसके तेहलान, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी के पूर्व निदेशक डा. पीएस नायक व केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान शिमला के पूर्व निदेशक डा. बीप सिंह भी मौजूद रहे।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा कि 376 मिलियन टन के रिकार्ड वैश्विक उत्पादन के साथ चक्कर और गेहूँ के बाद आलू दुनिया का तीसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है। चीन (94 मिलियन टन) के बाद भारत आलू का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक (54.2 मिलियन टन) है।



समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	17-10-23	10	2-8

हकृवि में तीन दिवसीय 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की वार्षिक कार्यशाला का शुभारंभ कम लागत से उत्पादन बढ़ाना व युवा पीढ़ी को कृषि व्यवसाय से जोड़ना हो प्राथमिकता: प्रो. काम्बोज

रतिमाजी वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे इस बैठक के दौरान भारत में आलू की वर्तमान और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा करें।

हरिभूमि न्यूज ••• हिंसार



हिंसार। कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.अन. काम्बोज।

फोटो: हरिभूमि

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला का शुभारंभ हुआ, जिसमें विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.अन. काम्बोज वतीर मुख्यातिथि रहे, जबकि सहायक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे विशिष्ट अतिथि के रूप में

मौजूद रहे। इसके अलावा केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. बृजेश सिंह भी उपस्थित रहे। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सभी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्- केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा

संयुक्त रूप से आयोजित की गई इस कार्यशाला में देश के विभिन्न राज्यों के 25 भारतीय कृषि परिषद परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। मुख्यातिथि प्रो. बी.अन. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि भारत की कृषि-खाद्य नीति, कम लागत से

खाद्य उत्पादन को बढ़ाना और कृषि को युवा पीढ़ी के लिए एक आकर्षक व्यवसाय बनाना की चुनौतियों पर केंद्रित है परंतु उत्पादकता में धीमी वृद्धि, चरम जलवायु घटनाएं, उत्पादन की बढ़ती लागत और कृषि जोत का निरंतर विखंडन किसानों के लिए कृषि-आधारित अजीबक

को अस्मिन् बन रहा है। उन्होंने प्रतिभागी वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे इस बैठक के दौरान भारत में आलू की वर्तमान और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा करें। साथ ही राष्ट्रीय खाद्य व पोषण सुरक्षा की रक्षा के लिए रणनीति तैयार करें।

आलू की 16 किस्मों की सिफारिश की गई

कुलपति ने कहा कि हरियाणा भी सब्जी फसलों में आलू क्षेत्रफल एवं उत्पादन दोनों में प्रमुख स्थान रखता है। इसकी खेती राज्य के कुल सब्जी क्षेत्र के 9-12 प्रतिशत भाग में की जाती है और कुल सब्जी उत्पादन में आलू उत्पादन का 13.73 प्रतिशत योगदान है। उन्होंने कहा कि हरियाणा की जलवायु परिस्थितियों के लिए आलू की 16 किस्मों की सिफारिश की गई है, जिनमें से कुफरी बादराज, कुफरी बहार,

आलू में जलवायु परिवर्तन आधारित शोध करने पर दिवा जोर

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महारथक महानिदेशक (फूल-सब्जी-मसाले और औषधीय पौधे) डॉ. सुधाकर पांडे ने आलू में जलवायु परिवर्तन आधारित शोध करने पर जोर दिया। स्वयं ही आलू में पोषण आधारित अनुसंधान के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आलू की कम अजर्बी की विशेषता वाली, जहाँ रहने वाली किस्मों पर शोध को प्राथमिकता देना समझा जा रहा है।

देश के 25 केंद्रों पर किए जा रहे अनुसंधान

केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. बृजेश सिंह ने बताया कि देश में आलू का उत्पादन व पोषकता बढ़ाने के उद्देश्य से अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना (आलू) के अंतर्गत देश के विभिन्न राज्यों में 25 केंद्रों पर अनुसंधान किए जा रहे हैं, जिसका मुख्यालय केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला है। उन्होंने कहा कि केंद्र का उद्देश्य किसान को दृष्टि से हरियाणा के कृषि-जलवायु क्षेत्रों में सफल उच्चव्युत्पन्न अनुसंधान करना है। हरियाणा की परिस्थिति में अर्ध-सुष्कृत वाले आलू को अधिक उपज प्राप्त करने के लिए आलू की कई किस्मों, कृषि-तकनीकों और पैदा करेणम जहाँ की सिफारिश करना है।

कुफरी सलज, कुफरी पुष्कर और कुफरी पुखराज सबसे अधिक उगाई जा रही किस्में हैं। इसके अलावा चावल-आलू प्रणाली में चावल के धुंसे का प्रबंधन, माइक्रो सिंक्रलर और ड्रिप सिंचाई का उपयोग करके

आलू की दुरुजती बुआई, जिक की कमी वाली मिट्टी में जिक का अनुप्रयोग, ड्रिप सिंचाई के तहत कंचे बेंड पर रोपण, जैविक आधारित उत्पादन तकनीक पर भी सिफारिशें सामने आई हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	16.10.2023	--	--

कम लागत से उत्पादन बढ़ाना व युवा पीढ़ी को कृषि व्यवसाय से जोड़ना हो प्राथमिकता : प्रो. बी.आर. काम्बोज



हिसार (चिराग टाइम्स)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में 41वीं अखिल भारतीय समन्वित आलू अनुसंधान परियोजना की तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला का शुभारंभ हुआ, जिसमें विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वतीर मुख्यातिथि रहे, जबकि सहायक महानिदेशक (फल-सब्जी-मसाले और औषधीय

पौधे) डॉ. सुभाकर पांडे विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। इसके अलावा केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. वृंजेश सिंह भी उपस्थित रहे। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्- केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई इस कार्यशाला में देश के विभिन्न

राज्यों के 25 भारतीय कृषि परिषद् परियोजना केंद्रों से आए वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि भारत की कृषि-खाद्य नीति, कम लागत से खाद्य उत्पादन को बढ़ाना और कृषि को युवा पीढ़ी के लिए एक आकर्षक व्यवसाय बनाना की चुनौतियों पर केंद्रित है परंतु उत्पादकता में धीमी वृद्धि, घटती जलवायु घटनाएँ, उत्पादन की बढ़ती लागत और कृषि जैव का निरंतर विखंडन किसानों के लिए कृषि-आधारित आजीविका को अस्थिर बना रहा है। उन्होंने प्रतिभागों वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे इस बैचक के दौरान भारत में आलू की वर्तमान और भविष्य

की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा करें। साथ ही राष्ट्रीय खाद्य व पोषण सुरक्षा की रक्षा के लिए रणनीति तैयार करें। कुलपति ने आलू के संदर्भ में बोलते हुए कहा कि 376 मिलियन टन के रिकॉर्ड वैश्विक उत्पादन के साथ चावल और गेहूँ के बाद आलू दुनिया की तीसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है। चीन (94 मिलियन टन) के बाद भारत आलू का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक (54.2 मिलियन टन) है। विश्व स्तर पर भारत का आलू उत्पादन लगभग 14.3 प्रतिशत है। भारत में उत्तर प्रदेश सबसे बड़ा उत्पादक (16.16 मिलियन मीट्रिक टन) है और हरियाणा 0.78 मिलियन मीट्रिक टन आलू का उत्पादन करता है। आलू की



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Times of India	16.10.2023	--	--

B

Hry to hike senior citizen pension to ₹3k, ACB to check ration depot flaws

TIMES NEWS NETWORK

Hisar: While addressing a "Jan Samvad" programme at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University in Hisar on Tuesday, Haryana chief minister Manohar Lal Khattar said that pension for senior citizens will soon be increased to Rs 3,000. "The senior citizens do not have to go through the hassle of submitting applications when they turn 60 years now as pensions are automatically generated through the PPP," Khattar claimed.

He also said that a budget allocation of Rs 151 crore has been made for removal of all high-tension wires passing over houses in the state. The CM said that necessary directions have already been issued to the energy department. He directed the department officials to ensure no construction is done under these power lines in the future.

The CM also observed a two-minute silence to pay tribute to the victims who lost their lives in the bus accident near Nainital. During the



Haryana CM Manohar Lal Khattar at an agri fair in Hisar on Tuesday

event, Khattar provided assistive devices to persons with disabilities, sponsored by Red Cross. He also inspected stalls featuring products made by women's self-help groups. The CM announced construction of two roads in Hisar — Khanak-Balsamand road to be built at a cost of Rs 37 crore and Hisar-Balsamand road at a cost of Rs 8 crore. A few differently abled persons also complained of irregularities in some ration depots in the

district, after which the CM ordered the anti-corruption bureau to look into the complaints related to fake ration cards and other related issues.

Meanwhile, some farmers were not allowed to enter the venue. Earlier, they had complained about shortage of seeds at the agricultural fair and wanted to meet the CM. They decided to send a memorandum to him via DC. Some Asha workers also raised slogans against the government.

JIND FARMER GETS TRACTOR

The CM also distributed prizes through lucky draws. Bharat Singh, a farmer from Mohan Khera village in Jind district, got a tractor worth Rs 7.50 lakh, while Ajit Singh of Kirdhan village in Fatehabad district got a tractor worth Rs 3.50 lakh. Surjit of Tibbi village in Fatehabad district won a land leveler machine worth Rs 2.50 lakh. A super seeder machine worth Rs 1.75 lakh was awarded to Gurpinder Singh of Ganga Abdul village in Punjab, while Ankit, a farmer from Darodi village in Jind district, received an electric power weeder Machine worth Rs 74,000.

S'KUND TYPE FAIR IN HISAR

Agriculture minister J P Dalal said in future a farmers' fair would be organised in Hisar on the lines of the Surajkund fair.